

Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 1, Petersburg 1855

वाङ्मन्त्रम् । जाम्बवान्समुद्रं ३, २, १, १७, २. दिशः समुद्रान्तम् AMAR. 28. — 2) wahrnehmen, bemerken: तदल्पशेषं समुद्रं कार्यम् R. 5, 37, 27. — 3) zu Jmd hinaufblicken, auf Jmd sein Vertrauen setzen: मामिव समुद्रन्तम् MBh. in BENF. Chr. 3, 7. BENFEY: nach Jmd aufschauen, verehren.

— उप १) zusehen; hinblicken auf: दमयन्ती — प्रासादस्या क्युपैतम् N. 22, 5. तं हृ पितोपेत्योवाच ÇAT. Br. 12, 2, 1, 9. — 2) erschauen: चरिणा च सुयुक्तं शत्रोः शक्तिव्यपेतया । गूढिन चरता तन्नमुपेक्षितमिदं मया ॥ R. 5, 29, 4. — 3) achten auf, Rücksicht nehmen auf: नदीशो परिपूर्णा ऽपि मित्रोदयमुपेतते (अपेतते?) PAÑKAT. II, 27. — 4) zusehen, zuwarten: वाक्शतमात्रमुपेतते SUÇR. 1, 33, 19. 2, 47, 7. — 5) übersehen, nicht beachten (z. B. einen Feind), in Stich lassen (z. B. einen Freund), vernachlässigen: नोपेतते क्षणमपि राजा साहसिकं नरम् M. 8, 344. MBh. 1, 5594. ये मां विप्रकृतां लुद्रिरूपेक्षधम् 3, 586. किमर्थमनयं धोरमुत्पद्यन्तमुपेतते 361. 1, 137. 14, 1558. 15, 835. R. 2, 88, 25. कथं शक्यमुपेतितुम् 4, 17, 35. 5, 2, 44. 36, 45. 22. 53. 42, 15. 6, 102, 7. SUÇR. 1, 63, 3. 206, 1. 6. ÇĀK. 184. PAÑKAT. I, 244. III, 2. 262 (lies उपेतमाणाः). KUMĀRAS. 5, 47. KATHĀS. 14, 40. 21, 81. Vid. 67. उपेतसि R. 5, 37, 6. उपेततः 68, 22. कथमात्मसकाशे रिपुरूपेक्ष्यते PAÑKAT. 66, 11. — Vgl. उपेतनीय fgg.

— अग्र्युप Jmd in Stich lassen MBh. 16, 160.

— समुप nicht beachten, in Stich lassen, vernachlässigen: शत्रुपत्तं समुपेतं यो मोक्षस्तमुपेतते MBh. 2, 1960. 2610. 1, 1675. 16, 162. MRĀKĪ. 59, 2. AMAR. 96. act.: परिरिक्षिष्यतीं समुपेतति मां कथम् MBh. 3, 578.

— निम् hinsehen, schauen nach, herumsehen, ansehen, betrachten, gewahren: निःश्वसन्निरिक्षिते MBh. 2, 2463. निरिक्षिताणास्तां ददर्श R. 2, 74, 15. निरिक्ष्य दिशः सर्वाः 3, 56, 5. न चोदके निरिक्षिते स्वं रूपम् M. 4, 38. एते सुरगणाः सर्वे निरिक्षिते समागताः । त्वामप्रतिकर्माणमप्रतिद्वन्द्वमाह्वे R. 1, 76, 18. यावदेतान्निरिक्षितं ऽहं योद्धुकामानवस्थितान् Bhag. 1, 22. यस्तु केवलसंरम्भात्प्रपातं न निरिक्षिते MBh. 3, 11808. संगतं तेन पापेन निरिक्षित्येनम् KATHĀS. 2, 19. MBh. 3, 15595. 17246. 4, 266. R. 1, 2, 11. 2, 25, 44. 47, 19. 68, 14. 74, 15. 28. 3, 52, 53. 53, 50. 67, 2. 77, 18. 78, 22. 79, 50. 4, 21, 38. 5, 3, 53 (निरिक्ष्यताम्). u. s. w. SUÇR. 1, 33, 18. PAÑKAT. II, 20. 143. 258, 13. Hit. 83, 10. 121, 6. Vikr. 18, 6. RAGH. 2, 52 (निरिक्ष्यमाणा). act. MBh. 1, 7694. 3, 12006. 4, 335. R. 1, 40, 4. 3, 68, 11. 6, 23, 7. PAÑKAT. IV, 63. 64.

— संनिस् erfahren, kennen lernen: मम त्वभिप्रायमसंनिरिक्ष्य R. 2, 21, 55.

— परा hinblicken (neben sich): दक्षिणार्धं परेक्षिते TS. 3, 2, 4, 5. प्रेष्य परेक्ष्य ÇAT. Br. 2, 4, 1, 6. 3, 6, 2, 3.

— पार um sich hinsehen, genau nach Jmd oder Etwas hinsehen, prüfen, untersuchen: परीक्षमाणास्तत्राय मार्गमाणाश्च जानकाम् R. 5, 17, 1. 16; 55. नेत्रे च वदन् चैव — तथा ग्रीवां हृदयं च परीक्ष्य 6, 82, 28. 27. नैता रूपं परीक्षिते नामो व्यसि संस्थितिः । सुत्रं वा विद्वपं वा पुमान्त्वयेव भुञ्जते ॥ M. 9, 14. अर्थाविव्याविदक्ष्यैव सूता विप्राश्च तद्विदः । मध्यमश्च परीक्षितो तव यज्ञार्थसिद्धये ॥ MBh. 14, 2087. ह्यरेदेव परीक्षिते ब्राह्मणं M. 3, 130. 149. न परीक्षिते साक्षात् 8, 72. परीक्ष्य चैनं प्रमदाभिः MBh. 4, 308. नौपार्थिर्क्षितुर्भिरिक्षिते SUÇR. 1, 130, 18. अर्थनित्यः परीक्षिते केनचिद्वृत्तिसामान्येन Nir. 2, 1. R. 5, 80, 9. 87, 24. SUÇR. 1, 98, 2. ÇĀK. 120. MRĀKĪ. 48, 20. KATHĀS. 18, 41. 21, 52. 24, 177. act.: यथा तन्न पश्येरन्परिक्षितो ऽपि MBh. 1, 5726. सर्वाणि भूतानि पर्यन्तत् (? SĀJ.: पर्यच्छत् = व्याप्तमन्वियेष) ÇAT.

Br. 10, 4, 2, 11. pass.: यत्र — संशयश्च परीक्ष्यते R. 5, 86, 17. भिषजापुरेवा-
दौ परीक्ष्यते SUÇR. 1, 124, 8. सर्वस्य हि परीक्ष्यन्ते स्वभावा नेतरे गुणाः
Hit. I, 18. परीक्षित M. 7, 54. 60. 217. 219. यत्वात्परिक्षितः पुंस्त्वे JĀGŪ. 1,
55. MBh. 2, 2953. 14, 2753. R. 4, 14, 15. 5, 29, 5. 33, 25. 81, 7. 82, 9. 84, 4.
6, 101, 8. PAÑKAT. I, 142. II, 121. V, 1. 16. 238, 2. RAGH. 2, 62. Vet. 14,
20. 13, 5. ÇUK. 43, 7. wahrnehmen, finden: अदेवमात्कान्प्रामान्यपरिक्ष्य
विविधाः क्षितिः । संविभेत्ते विभक्तं नादेयेन स चारिणा ॥ RĀĀĀ-TAR. 3,
109. — caus. prüfen —, untersuchen lassen: तांश्च सम्यक्परिक्ष्यते M.
7, 194. तुलामानं प्रतीमानं सर्वं च स्यात्सुलक्षितम् । षु षु च मासेषु पुनरेव
परिक्ष्यते ॥ 8, 403.

— प्र hinsehen, zusehen, ansehen, erblicken, gewahren: मित्रस्यैवा च-
लुषा प्रेतैः TS. 1, 1, 4. 1. AV. 9, 6, 3. 18. प्राङ्मुखे ÇAT. Br. 1, 9, 3, 13. 14. 1,
2, 14. अद्वारेण सदः प्रेतमाणां ब्रूयन्मा प्रेतया इति 4, 6, 2, 9. 10. 14, 1, 2, 31.
2, 2, 35. KĀTJ. ÇR. 2, 3, 16. 6, 18. 8, 4, 23. उद्भुल्लः प्रेतमाणां दर्शं मरुतीं
चमूम् R. 2, 97, 13. वैदुर्याः प्रेतमाणायाः (vor V. Angesicht) पपाकालमम-
न्यत N. 7, 8. यत्र धर्मो ह्यधर्मेण सत्यं यत्रानूतेन च । ह्यन्यते प्रेत्यमाणाणां
(lies प्रेत) कृतास्तत्र सभासदः ॥ M. 8, 14. एतदेवविधं चित्रमिह तात यु-
धिष्ठिर । प्रेतते सर्वभूतानि बहुशः पर्वसंधिषु ॥ MBh. 3, 11657. INDR. 2,
26. DRAUP. 1, 2 (lies प्रेतमाणा st. प्रेत्य). ARĀ. 1, 1. प्रेततानिमेषो देवीम्
R. 2, 12, 48. 68, 19. 78, 21. 1, 1, 63. DAÇ. 2, 10. SUÇR. 1, 125, 10. स तद्राजा-
पहरणं सुहृत्पागं च सर्वशः । वने च तं परिधंसं प्रेत्य N. 10, 9. तमापातं
प्रेत्य PAÑKAT. 23, 11. RAGH. 12, 44. act.: प्रेतत्या भक्तितो मे ऽद्य प्रियो भ-
र्ता MBh. 1, 6905. 3, 581. 11991. 14390. Hit. 3, 7. प्रेतानि सरितां श्रेष्ठाम्
R. 2, 50, 14. प्रेतित n. Blick 4, 12, 41. — 2) ruhig ansehen (ohne da-
gegen Einsprache zu thun): गर्ह्ये पापउवास्तेव युधि श्रेष्ठान्महाबलान् ।
यत्किञ्चिदश्यामानां प्रेतते धर्मपत्नीम् MBh. 3, 526. Vgl. M. 8, 147: यत्किञ्चिदश-
वर्षाणि संनिधौ प्रेतते धनो । भुङ्गमानं परैस्तुल्लो न स तन्नद्युमर्हति ॥

— अनुप्र nachschauen: सा ताननुप्रेत्य विशालनेत्रा जिवृत्तमाणां DRAUP.
5, 23.

— अभिप्र ansehen, hinsehen, erblicken: युधिष्ठिरमभिप्रेत्य चाग्नौ व-
चनमब्रवीत् DRAUP. 8, 39. 9, 18. प्राचीं दिशम् MBh. 3, 11843. तम् — दक्ष-
मानमभिप्रेत्य स्त्रियस्ताः संप्रडुजुवः 888. 2053. fg. 4023. 11400. R. 2, 53, 2.

— समभिप्र dass. R. (ed. ÇRIR.) 1, 51, 12. WEST.

— अग्र हि 3, 21 fehlerhaft für संप्र.

— उत्प्र १) zu Jmd hinaufschauen um seinen Worten zu lauschen
(wie der Schüler zum höher sitzenden Lehrer): उत्प्रेक्षामो (sic) वयं ता-
वन्मतिमतं विनीषणम् । सर्वार्थेषु परभूता गुरुं क्षिप्यगणा इव ॥ R. 5, 83,
8. — 2) gewahr werden: तदुत्प्रेक्ष्योत्प्रेक्ष्य प्रियसखि गतांस्तांश्च दिवसात्र
ज्ञाने को हेतुर्दलति शतधा यत्र हृदयम् AMAR. 38. — 3) übertragen auf
(loc.): तत्र तेषां तात्पर्यमवबुद्ध्वा वेदविहृद्धे ऽप्यर्थं तात्पर्यमुत्प्रेक्षमाणाः MA-
DHUS. in Ind. St. 1, 23, ult. इति तयोत्प्रेक्षितम् Sch. zu NALOD. 2, 21.

— उपप्र übersehen, nicht beachten: किमर्थं मां प्राकृतवडुप्रेक्षति सं-
सिद्धि MBh. 1, 3022.

— विप्र hierhin und dorthin schauen R. 3, 52, 3. BENFEY: zweifeln (?).

— संप्र १) ansehen, betrachten, erblicken, gewahr werden: संप्रेक्ष्य ना-
सिकाग्रं स्वम् Bhag. 6, 13. MBh. 3, 11360. R. 1, 31, 3. 2, 34, 25. 37, 9. 82,
3. 104, 18. 111, 27. तमापतत्तं संप्रेक्ष्य MBh. 1, 5982. 3, 2240. 2805. BRĀH-
MAN. 2, 18. R. 2, 84, 11. 3, 50, 9. 4, 37, 34. 5, 20, 10. 6, 18, 6. BUARTH. 3, 100.